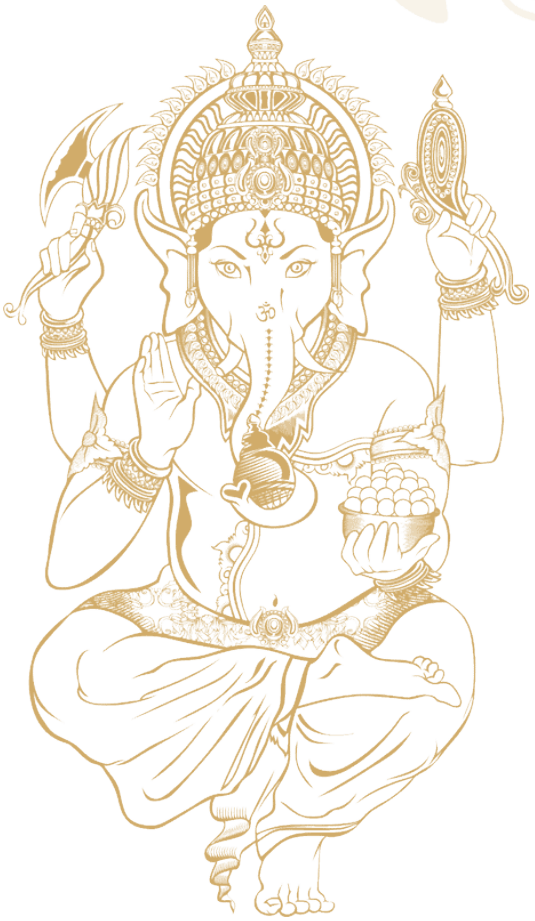

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121481501 Date: 05/03/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
14/09/1994	जन्म तिथि	13/11/1995
बुधवार	दिन	सोमवार
घंटे 11:50:00	जन्म समय	09:15:00 घंटे
घटी 14:18:08	जन्म समय(घटी)	06:03:48 घटी
India	देश	India
Hamirpur	स्थान	Chandigarh
31:38:00 उत्तर	अक्षांश	30:43:00 उत्तर
76:36:00 पूर्व	रेखांश	76:47:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:23:36	स्थानिक संस्कार	-00:22:52 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:06:44	सूर्योदय	06:47:09
18:31:17	सूर्यास्त	17:26:53
23:47:12	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:04

वृश्चिक	लग्न	वृश्चिक
मंगल	लग्न लग्नाधिपति	मंगल
धनु	राशि	कर्क
गुरु	राशि-स्वामी	चन्द्र
पूर्वाषाढ़ा	नक्षत्र	पुनर्वसु
शुक्र	नक्षत्र स्वामी	गुरु
3	चरण	4
सौभाग्य	योग	शुभ
तैतिल	करण	गर
फा-फारुख	जन्म नामाक्षर	ही-हिना
कन्या	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृश्चिक
क्षत्रिय	वर्ण	विप्र
मानव	वश्य	जलचर
वानर	योनि	मार्जार
मनुष्य	गण	देव
मध्य	नाड़ी	आद्य
मूषक	वर्ग	मेष

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 9वर्ष 7मा 6दि		09:20:14	वृश्चि	लग्न	वृश्चि	27:07:42	गुरु 3वर्ष 0मा 9दि	
मंगल		27:25:47	सिंह	सूर्य	तुला	26:28:49	बुध	
21/04/2020		20:15:58	धनु	चंद्र	कर्क	00:48:40	22/11/2017	
22/04/2027		24:13:22	मिथु	मंगल	वृश्चि	23:08:48	22/11/2034	
मंगल	17/09/2020	20:53:07	कन्या	बुध	तुला	20:32:16	बुध	20/04/2020
राहु	05/10/2021	18:11:11	तुला	गुरु	वृश्चि	24:43:49	केतु	17/04/2021
गुरु	11/09/2022	11:27:02	तुला	शुक्र	वृश्चि	18:17:50	शुक्र	16/02/2024
शनि	21/10/2023	14:16:42	कुंभ व	शनि व	कुंभ	24:15:40	सूर्य	22/12/2024
बुध	17/10/2024	22:41:57	तुला व	राहु व	तुला	02:25:34	चन्द्र	24/05/2026
केतु	15/03/2025	22:41:57	मेष व	केतु व	मेष	02:25:34	मंगल	21/05/2027
शुक्र	16/05/2026	28:43:56	धनु व	हर्ष	मक	03:19:09	राहु	07/12/2029
सूर्य	20/09/2026	26:52:44	धनु व	नेप	धनु	29:23:31	गुरु	14/03/2032
चन्द्र	22/04/2027	01:55:34	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	06:17:29	शनि	22/11/2034

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:47:12 चित्रपक्षीय अयनांश 23:48:04

लग्न-चलित

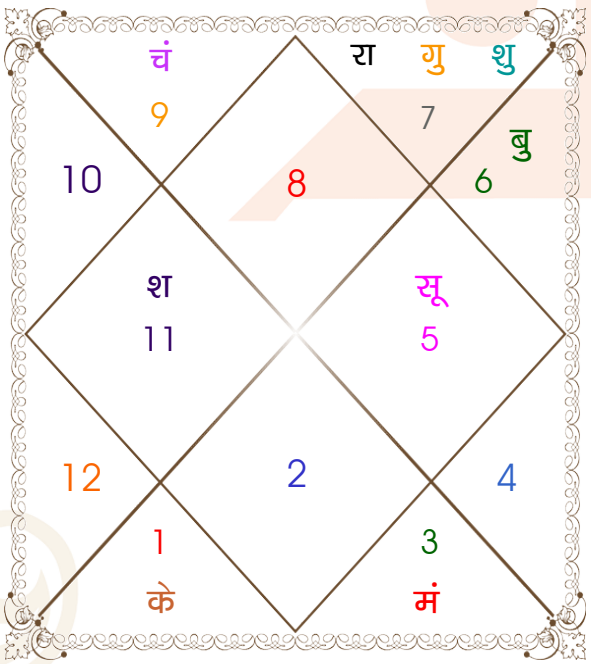

लग्न-चलित

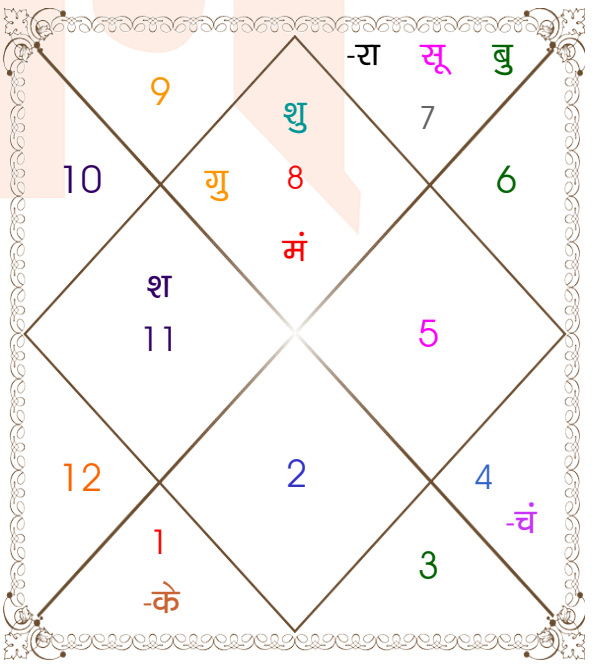

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	मार्जार	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	चन्द्र	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	कर्क	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.50		

कुल : **21.5 / 36**

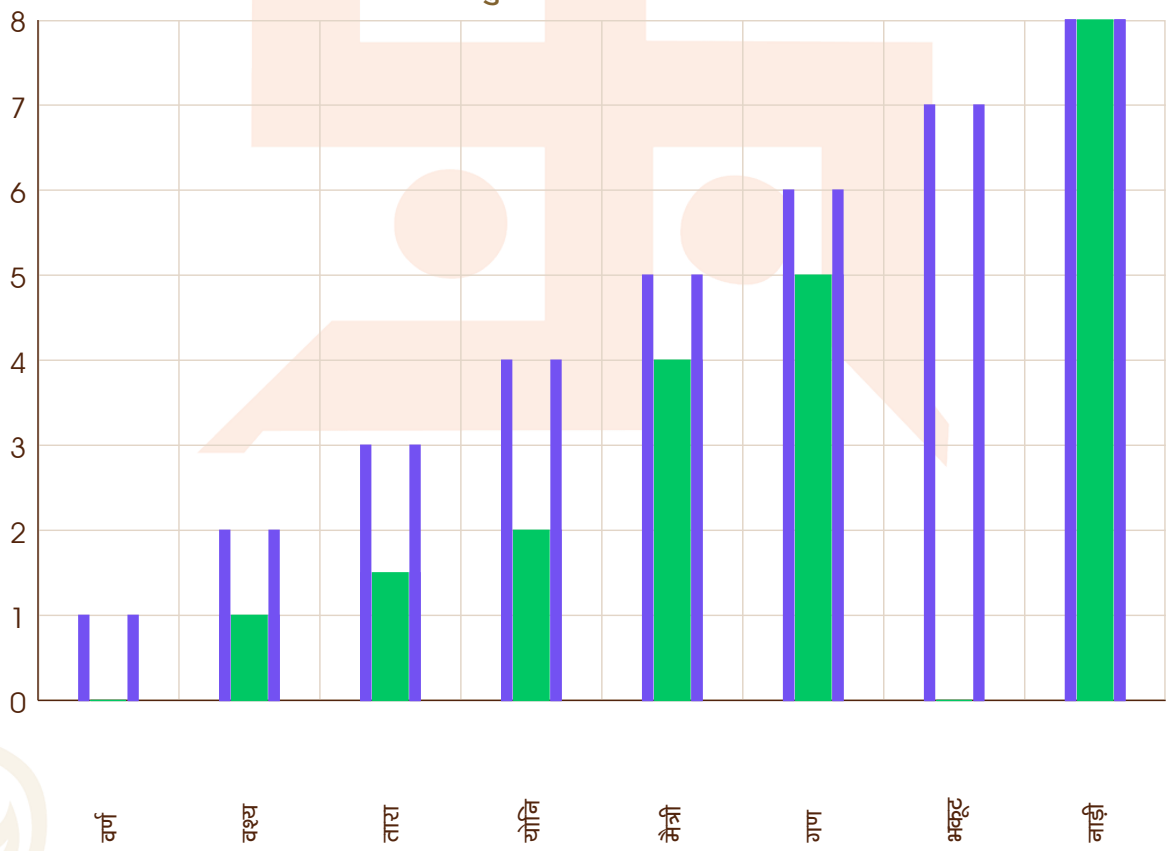

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

। का वर्ग मूषक है तथा। का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर।म है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार। और। का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

। मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

। मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

ढप्:थ्डम्गंवूदक्मइ;0द्धत्र1द्धझ क्योंकि मंगल । कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु। कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

। तथा। में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

। का वर्ण क्षत्रिय तथा । का वर्ण ब्राह्मण है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण दोनों के बीच ।दैव अहं का टकराव होता रहेगा। ।ाथ ही । हमेशा श्रेष्ठता मनोग्रंथि ो ग्रस्त रहेंगी तथा स्वयं को अपने पति ो हमेशा अधिक बुद्धिमान एवं चतुर ।मझेंगी। श्रेष्ठता की यही भावना । एवं बच्चों के विका। में बाधक ।ाबित हो ।कती है।

वश्य

। का वश्य चतुष्पद अर्थात पशु है एवं । का वश्य जलचर है अतः यह मिलान औसत मिलान होगा। पशु एवं जलचर दोनों का ।ाथ-साथ प्रकृति में ।ह अस्तित्व होता है। इसलिये दोनों के स्वभाव, गुण, व्यवहार एवं पसंद/नापसंद अलग-अलग होंगे। जिसके फलस्वरूप दोनों शायद ही कभी एक-दूसरे को नुकसान पहुंचायेंगे। । एवं । दोनों अपने-अपने अलग कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्व निभाते रहेंगे। इ। मिलान में । एवं । दोनों एक-साथ प्रेमपूर्वक अपने कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्व का निर्वहन करते रहेंगे।

तारा

। की तारा प्रत्यरि तथा । की तारा ।ाधक है। । की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। विवाह के उपरांत । कालांतर में बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं नैतिक पतन का शिकार हो ।कता है। उसके अवैध ।बंध भी हो ।कते हैं। परिणामस्वरूप । को काफी कष्टों का ।ामना करना पड़ ।कता है। भविष्य में तनाव, निराशा, अवसाद एवं पीड़ा के कारण उसका झुकाव अध्यात्म की ओर हो ।कता है।

योनि

। की योनि वानर है तथा । की योनि मार्जार है। अर्थात दोनों की योनि ।मान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात ।म ।बंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी ।मझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में ।हयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह ।कता है। ।ाथ ही दोनों के बीच अविश्वा। की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को ।देह की भावना ो देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी ।मझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो ।कते हैं। ।भव है कि दोनों के बीच अवैध ।बंध को लेकर ।देह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो ।कता है। बात-बात में दोनों के बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो ।कता है। वर या कन्या में ो कोई भी विश्वासघात भी कर ।कता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो ।कता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक ।घर्ष के उपरांत ही ।फलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में ।फलता कम ही मिलेगी। अर्थात

मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की ंभावना है। जिसके कारण दोनों को ंमय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात धनागम के ोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमां एवं ेक में रुचि की कमी भी रह ंकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण ंमय-समय पर धन हानि भी हो ंकती है। आप ंमें प्रेम एवं ौहार्द्र की भी कमी रहेगी। इ ंप्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न ंमान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में । का राशि स्वामी । के राशि स्वामी ो मित्र का ंबंध रखता है। जबकि । का राशि स्वामी । के राशि स्वामी के ंथ ंम का ंबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार ो अति उत्तम मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि ो यदि एक ंथी के राशि स्वामी दूसरे ंथी के लिए मित्र हो किंतु दूसरे ंथी के राशि स्वामी अपने ंथी के राशि स्वामी को ंम मानते हों तो इसे भी उत्तम मिलान माना जाता है। ऐसी स्थिति में वैवाहिक ुख, शांति, खुशहाली, प्रेम एवं ंमृद्धि ो युक्त जीवन होता है। अतः दम्पत्ति के बीच पारस्परिक ंमझ, विश्वा एवं ंहयोग की भावना बनी रहेगी। दोनों अपने घरेलू अथवा ंमाजिक दायित्वों का निर्वहन ंथ मिलकर करते रहेंगे तथा ंभी की प्रशंसा का पात्र बनेंगे।

गण

। का गण मनुष्य तथा । का गण देव है। अतः यह मिलान उत्तम मिलान है। ऐसे मिलान में । सतोगुणी होंगी तथा उसका स्वभाव दयालु, मृदु, ौम्य तथा कोमल होगा है जो कि एक महिला का नैसर्गिक गुण है तथा अन्य ंभी लोग भी इन्हीं गुणों की अपेक्षा करेंगे। जबकि दूसरी ओर । व्यावहारिक, मिलनसार, परिश्रमी, बुद्धिमान तथा महत्वाकांक्षी होंगे। जोकि इ ंभौतिकवादी, विश्व के पुरुष का नैसर्गिक गुण होता है। इन गुणों एवं योग्यताओं के कारण । अपनी पत्नी, बच्चों, परिवार एवं ंमाज की हर अपेक्षा को पूरा करने में ंक्षम रहेंगे तथा ंभी इनसे खुश भी रहेंगे।

भकूट

। से । की राशि अष्टम भाव में स्थित है तथा । से । की राशि षष्ठम भाव में स्थित है। जिसके कारण यह मिलान बिल्कुल अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें षडाष्टक दोष लग रहा है। इ ंमिलान को भकूट मिलान में स्वीकृति नहीं प्रदान की जाती है तथा 0 अंक/गुण प्रदान किए जाते हैं।। एवं । दोनों आक्रामक, गुस्सैल एवं झगड़ालू स्वभव के होंगे।। शारीरिक रूप ो कमजोर हो ंकते हैं, उनके अनेक शत्रु हो ंकते हैं तथा अपने व्यवसाय में भी उन्हें जूझना पड़ ंकता है। दूसरी ओर । बिल्कुल लापरवाह, कोई भी कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारी नहीं निभाने वाली, हरदम स्वयं के स्वार्थपूर्ति में ही खोई रहने वाली होंगी। उन्हें किसी भी प्रकार

का वैवाहिक सुख प्राप्त नहीं हो पायेगा तथा उनके पति की मृत्यु की भी संभावना बनी रहेगी।

नाड़ी

वर की नाड़ी मध्य है तथा कन्या की नाड़ी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। आद्य एवं मध्य नाड़ी का समन्वय अति उत्तम होता है क्योंकि यह जीवनी शक्ति को संतुलित करता है। तीनों जीवनी शक्तियों वात, पित्त एवं कफ का संतुलन जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। अतः आपकी संतान उत्तम स्वास्थ्य, जनन क्षमता एवं स्वस्थ तथा बुद्धिमान संतान होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

। की जन्म राशि अग्नितत्व युक्त धनु तथा । की राशि जलतत्व युक्त कर्क राशि है। अग्नि एवं जल में नैसर्गिक शत्रुता होने के कारण। और। के परस्पर दाम्पत्य ंबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा वैवाहिक जीवन में कठिनाइयां रहेंगी अतः मिलान अच्छा नहीं रहेगा ।

। की जन्म राशि का स्वामी बृहस्पति तथा । की राशि का स्वामी चन्द्रमा परस्पर ंम एवं मित्र राशि में स्थित हैं। अतः इसके प्रभाव ो। और। के परस्पर ंबंध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा एक दूसरे के गुणों की मुक्त भाव ो प्रशंसा करेंगे तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे। ाथ ही एक दूसरे के प्रति प्रेम ंहानुभूति एवं ंमर्पण के भाव का भी ंमय ंमय पर प्रदर्शन करेंगे। इसके अतिरिक्त ुख दुख में भी एक दूसरे को हार्दिक ंहयोग प्रदान करेंगे फलतः दाम्पत्य जीवन में ुख का भाव बना रहेगा।

। और। की राशियां परस्पर अष्टम एवं षष्ठ भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह षडाष्टक भकूट दोष दाम्पत्य जीवन के लिए अशुभ कहलाता है। इसके प्रभाव ो उपरोक्त शुभ प्रभावों में न्यूनता आएगी तथा मतभेद एवं विरोध के भाव में वृद्धि होगी जिससे दाम्पत्य ंबंधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा। एक दूसरे के प्रति । और। उपेक्षा का भाव रखेंगे तथा ुख दुःख में ंहयोग कम ही प्रदान करेंगे। अतः वैवाहिक जीवन में ुख की अल्पता रहेगी। यदि । और। सामंजस्य एवं बुद्धिमता पूर्वक कार्य करें तो दुष्प्रभावों में कमी आ ंकती है।

। का वश्य चतुष्पद एवं । का वश्य जलचर है। नैसर्गिक रूप ो चतुष्पद एवं जलचर की ंमानता रहती है। अतः इसके प्रभाव ो इनका दाम्पत्य जीवन ुखी रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर ंमानता के कारण परस्पर ंन्तुष्टि एवं प्रसन्नता बनी रहेगी। वे एक दूसरे की काम भावनाओं को शान्त करने में भी ंमर्थ रहेंगे।

। का वर्ण क्षत्रिय तथा । का वर्ण ब्राह्मण है। अतः । पराक्रमी तथा ंहसिक कार्यो को ंम्पन्न करेंगे परन्तु । की प्रवृति शैक्षणिक तथा धार्मिक कार्यो में प्रवृत रहेगी। अतः कार्य क्षमता में अंतर ो। और। को परेशानी का ंमना करना पड़े ंकता है।

धन

। और। दोनों की तारा परस्पर ंम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा ंमान्य गति ो धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी ंम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम ो प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इ प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की ंभावना नहीं होगी परन्तु ंमान्य जीवन धनऐश्वर्य ो युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके ।।थ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप ।न्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

। की नाड़ी मध्य तथा । की नाड़ी आद्य है। अतः दोनों की अलग अलग नाड़ी होने के कारण इनके ऊपर नाड़ी दोष का कोई दुष्प्रभाव नहीं रहेगा लेकिन मंगल का दोनों के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव रहेगा। इससे दोनों गुप्त या धातु ।बंधी रोगों । कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा मूत्र रोग ।बंधी परेशानी भी रहेगी। ।।थ ही । भी हृदय ।बधी रोग । कष्ट प्राप्त करेंगे तथा काम क्रियाओं में भी शिथिलता की अनुभूति करेंगे फलतः दाम्पत्य जीवन में ।ुख की अल्पता आएगी। । भी यदा कदा काम ।बंधों में उदासीनता का परिचय देंगी। अतः उपरोक्त प्रभावों में न्यूनता करने के लिए। और । को नियमित रूप । हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के व्रत रखने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि । । और । का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव । उन्हें उचित ।मय पर ।तति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। ।।थ ही बच्चों के जन्म में भी ।।मान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग । करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त । और । के पुत्र एवं कन्या ।तति की ।ख्या ।मान होगी।

प्रसव के विषय में । के मन में पहले । ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन । को इ। विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा ।।मान्य रूप । गर्भावस्था का ।मय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में । को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा ।ुंदर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में ।फल होंगी। ।।थ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष । । और । सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता । उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। ।।थ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य ।म्पन्न नहीं करेंगे। इ। प्रकार । और । का पारिवारिक जीवन ।ुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

। तथा उसकी ।।। के परस्पर ।बध अच्छे नहीं रहेंगे। आयु में अधिक अन्तर होने के कारण इनके गहन मतभेद रहेंगे। लेकिन अन्य कोई भी ।मस्या इतनी गंभीर नहीं होगी जिनका कोई ।माधान न हो। अतः यदि । धैर्य एवं बुद्धिमता पूर्वक ।।मंजस्यशील प्रवृति का अनुसरण करें तो ।।। से ।बधों में अनुकूलता आ ।कती है। अतः अपनी ओर । उन्हें उनकी पूर्ण रूप । ।ेवा तथा ।ुख ।ुविधाएं प्रदान करनी चाहिए।

ससुर के ।।थ । के ।बध मधुर रहेंगे तथा अपने विनम्र व्यवहार ।म्मान की

भावना तथा ेवा की प्रवृति े उन्हें प्रसन्न तथा ।न्तुष्ट रखने में प्रसन्न रहेंगी। लेकिन देवर एवं ननदों े ।बधों में प्रतिकूलता रहेगी तथा आप। में ईर्ष्या, प्रतिद्वन्दिता एवं आलोचना का भाव रहेगा।

इ। प्रकार । का ।सुराल में ।मय ।।मान्य रूप े ही व्यतीत होगा तथा अन्य जनों को अपनी ओर े ।न्तुष्ट रखने में ।र्वदा तत्पर रहेंगी।

ससुराल-श्री

। के अपनी ।।। से ।बधों में मधुरता रहेगी तथा ।।। को वह अपनी माता के ।मान पूर्ण आदर एवं ।म्मान प्रदान करेंगे। वह उन्हें अपने पुत्र के ।मान ।मझेंगी तथा उसी प्रकार अपनत्व तथा वात्सल्य प्रदान करेंगी। ।।थ ही ।मय ।मय पर वे ।पत्नीक ।।। से मिलने के लिए ।सुराल जाते रहेंगे।

लेकिन ।सुर के ।।थ में । के ।बध अच्छे नहीं रहेंगे। इनकी आयु में अधिक अंतर के कारण वैचारिक तथा ैद्धांतिक मतभेद ।मय ।मय पर उत्पन्न होते रहेंगे। लेकिन यदि दोनों ।।मंजस्य की प्रवृति े कार्य लें तो मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा मधुर ।बधों में वृद्धि होगी। ।।थ ही ।।ले एवं ।।लियों े भी ।बधों में तनाव रहेगा तथा मानसिक स्तर पर विभिन्नता रहेगी जिससे एक दूसरे को वांछित ।हयोग स्नेह एवं ।हानुभूति अल्प ही प्रदान करेंगे। अतः इनको परस्पर ।।मंजस्य के भाव की स्थापना करनी चाहिए। इ। प्रकार ।सुराल पक्ष का दृष्टिकोण । के प्रति ।।मान्य ही रहेगा।